मिश्रित अर्थव्यवस्था को आप क्या समझते हैं? इसके गुण-दोषों की विवेचना करें। भारत के संदर्भ में इसके औचित्य को स्पष्ट करें।

मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूंजीवादी-समाजवादी अर्थव्यवस्था के दोषों का निराकरण कर उनके गुणों को अपनाने की चेष्टा की गयी है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों का साथ-साथ अस्तित्व होता है। चूंकि इसमें पूंजीवाद एवं समाजवाद की मिश्रित व्यवस्था पायी जाती है अतः इसे मिश्रित अर्थव्यवस्था कहते हैं।

मिश्रित अर्थव्यवस्था के निम्नलिखित गुण होते हैं।

आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता :-

मिश्रित अर्थव्यवस्था में उत्पादकों, श्रमिकों एवं उपभोक्ताओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में जनता को पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता भी प्राप्त होती है।

निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र का सह-अस्तित्व :-

समाजवादी अर्थव्यवस्था में निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों को विकास का अवसर मिलता है जिससे अर्थव्यवस्था का समावेशित विकास होता है।

आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक स्थायित्व :-

समाजवादी अर्थव्यवस्था के समान मिश्रित अर्थव्यवस्था

में भी आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जाता है।
अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था के दोष भी निम्नलिखित है।
(i) मिश्रित अर्थव्यवस्था का अंत :- ऐसा माना जाता है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था अधिक समय तक कायम नहीं रह सकती है। उदाहरण के लिए, मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र का इतना अधिक विस्तार हो सकता है जिससे निजी क्षेत्र का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।
(ii) आर्थिक अस्थायित्व :- मिश्रित अर्थव्यवस्था में समुचित नियंत्रण के अभाव में निजी क्षेत्र के उद्योग आन्तरिक एवं वाह्य बाजार की शक्तियों की चपेट में आ सकते हैं।
अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था का औचित्य भी निम्नलिखित है।
(i) साधनों की व्यवस्था
(ii) पूँजीगत उद्योगों का विकास
(iii) सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति
(iv) संरचनात्मक सुविधाओं इत्यादि
(v)

अतः इस प्रकार मैं कह सकता हूँ कि मिश्रित अर्थव्यवस्था के गुण-दोष तथा इसके औचित्य निम्नलिखित थे।

Economics Dept AKP

Economics Dept

(1) मार्शल के "उपभोक्ता की बचत" के विचार का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

उपभोक्ता की बचत की धारणा को प्रथम बार 1844 में फ्रांसीसी अर्थशास्त्री प्रो. ड्यूपिट ने दिया था। बाद में इस विचार को प्रो. मार्शल ने अपनी पुस्तक Principles of Economics में वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया। मार्शल ने उपभोक्ता का लगान तथा बाद में उपभोक्ता की बचत के नाम से पुकारा। भले ही वर्तमान समय के अर्थशास्त्रियों ने उपभोक्ता की बचत को क्रेता की बचत' नाम दे दिया है।

मार्शल के अनुसार :-

किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने के लिए तत्पर रहता है, इस दोनों का अंतर ही अतिरिक्त संतोष का आर्थिक माप है

पैनसन के अनुसार :-

जो कुछ हम देने को तैयार है और जो कुछ हम वास्तव में दे देते है, इन दोनों के अंतर को ही "उपभोक्ता की बचत" कहा जाता है।

प्रो. सैन के अनुसार :-

इन्होंने सीधे-सादे शब्दो में इस प्रकार से स्पष्ट किया है कि " उपभोक्ता को उसकी खरीद से प्राप्त होने वाला अतिरिक्त संतोष उपभोक्ता की बचत कहलाता है।

Scanned By Scanner Go

उपर्युक्त परिभाषाओं से हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि किसी भी अर्थशास्त्री ने मार्शल से भिन्न विचार नहीं दिये है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण :-

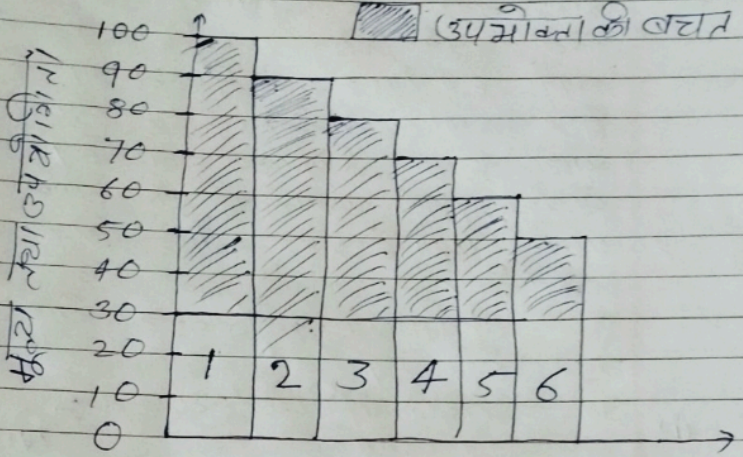

अतः चित्र में खड़े दण्ड जिन्हे आच्छादित किया गया है स्पष्ट है कि पहली इकाई से मिलने वाली उपयोगिता सबसे अधिक है, उसका दण्ड बड़ा है, उपयोगिता के घटने के साथ-साथ दण्ड भी घटते हैं।

उपभोक्ता की बचत की आलोचना निम्न हैं।

(i) उपयोगिता की माप करना कठिन है
(ii) उपभोक्ता की बचत का काल्पनिक होना
(iii) जीवन - रक्षक वस्तुओं में नियम का लागू न होना
(iv) उपभोक्ता के आर्थिक स्तर में अंतर
(v) द्रव्य की सीमांत उपयोगिता का स्थिर न होना
(vi) उपभोक्ता की आय तथा रुचियों में परिवर्तन इत्यादि।

AKP